सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण '7 A'

Unit II: भाषिक योग्यताओं का विकास

1. श्रव्य - दृश्य एवं मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास
   - a. भाषायी कौशलों का विकास
   - b. भाषायी कौशलों का महत्व
   - c. भाषा के कौशल
   - d. श्रवण उद्देश्य एवं अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन
   - e. श्रवण कौशल के लिए श्रव्य सामग्री का प्रयोग
   - f. भाषायी कौशल - उच्चारण या बोलने का कौशल
   - g. मौखिक अभिव्यक्ति की आवश्यकता

2. पठन - योग्यता का विकास
   - a. पठन एवं वाचन शिक्षण कौशल
   - b. विद्यालय में हिन्दी शिक्षक द्वारा सस्वर वाचन एवं मौन-वाचन के अवसर
   - c. सस्वर वाचन व मौन वाचन में अन्तर
   - d. वाचन शिक्षण की विधियाँ
   - e. वाचन के लिए ध्यान देने योग्य बातें
   - f. उच्चारण के भेद

3. लिखित अभिव्यक्ति क्षमता का विकास
   - a. लेखन कौशल
   - b. लेखन शिक्षण की आवश्यकता
   - c. लेखन कौशल का महत्व
   - d. लेखन शिक्षण का समय
   - e. हिन्दी भाषा की लिखित शिक्षा
   - f. लिखित अभिव्यक्ति की शिक्षण विधियाँ
   - g. शुद्ध लेखन तत्व

By. Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

भाषा के कौशल

विचारों का सम्प्रेषण का माध्यम भाषा है। व्यक्ति भाषा के द्वारा अपनी बात को दूसरों को सुनाता है और दूसरों की बातों को सुनता है, इससे विचारों में आदान-प्रदान होता है। अतः बालकों को इसमें विचारों के आदान-प्रदान में कुशल/प्रवीण बनाना ही भाषा की श्रेष्ठता है। हम विचारों की अभिव्यक्ति दो प्रकार से करते हैं, जैसे—बोलकर अथवा लिखकर। इसी प्रकार विचारों का ग्रहण भी दो प्रकार से होता है, जैसे—सुनकर अथवा पढ़कर। इस प्रकार हम पाते हैं कि भाषा के कौशल के भी चार प्रकार होते हैं—सुनना, बोलना, पढ़ना व लिखना। सुनने व पढ़ने में आन्तरिक मानसिक क्रिया की प्रमुखता है तथा यह क्रिया अमूर्त है, लेकिन बोलना व लिखना दो क्रियाएँ मूर्त क्रियायें हैं। इसमें मानसिक क्रिया के साथ-साथ मुख, हाथ, आँख आदि भी सक्रिय रहते हैं। यहाँ वक्ता के मन का प्रत्यय शब्द बिम्ब (संकेत) का रूप ग्रहण करता है, बाद में वही शब्द-बिम्ब, ध्वनि के रूप में परिणित होता है। ध्वनि के लिए 'वाक्यंत्र' मुख, विवर, जिह्वा आदि सक्रिय होते हैं। ध्वनि श्रोता के कान द्वारा मस्तिष्क में ध्वनि बिम्ब बनाती है। अब इसके बाद ध्वनि बिम्ब का यह सम्बन्ध मनोवैज्ञानिक है।

भाषा कौशल

↓

↓ सुनना ↓ बोलना ↓ पढ़ना ↓ लिखना

इसी आधार पर भाषा शिक्षण के उद्देश्य का निर्धारण होता है। सुनकर व पढ़कर बालक ज्ञान प्राप्त करता है, भाषा सम्बन्धी अनुभवों की वृद्धि करता है, ज्ञानात्मक उद्देश्यों की पूर्ति करता है, सुनकर व पढ़कर अर्थ ग्रहण करता है और बोलकर व लिखकर अभिव्यक्ति करता है। सुन्दर कविता, लेख को पढ़कर आनन्द प्राप्त करता है। कविता लयपूर्वक बोलकर काव्य पाठ का आनन्द प्राप्त/प्रदान करता है। सुन्दर, कुशलतापूर्वक व प्रवीणता से लिखकर विचारों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है।

भाषा कौशल के उपर्युक्त क्रम ही क्यों ?—शिक्षाविद् **एस. के. देशपाण्डे** के अनुसार, "भाषा शिक्षण का सम्बन्ध केवल ज्ञान प्रदान करना या सूचनाएँ प्रदान करना मात्र ही नहीं है बल्कि भाषा सीखने वाले को इन चारों विविध कौशलों से दक्षता करना है; जैसे—सुनना > बोलना > समझना > लिखना।"

अतः भाषा सीखने का स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक क्रम इस प्रकार है—सुनना > बोलना > पढ़ना > लिखना।

Scanned with CamScanner

भाषा सीखना एक नैसर्गिक क्रिया है जो आयु वृद्धि के साथ-साथ सशक्त होती जाती है। बिना रुचि होते हुए सीखी गई भाषा में प्रवाह व गति का अभाव रहता है। इन चारों क्षमताओं में बालक दक्षता प्राप्त कर सकेगा यदि उसने कुछ प्रमुख आदतों का निर्माण कर लिया है। जैसे—शुद्ध भाषा बोलना (शुद्धोच्चारण), सफलतापूर्वक स्वर पाठ और मौन पाठ का पाना, वर्तनी एवं वाक्य गठन सम्बन्धी भूलें किये बिना शुद्ध भाषा लिखना, शान्त रहकर धैर्यपूर्वक दूसरे की बात सुनना।

सर्वप्रथम बालक अपने माता-पिता एवं परिवारजन व अन्य सदस्यों को बोलते हुए देखते-सुनते हैं तथा उनका अनुकरण करते हैं और ऐसा करते-करते धीरे-धीरे भाषा बोलना सीख जाते हैं, जब उनकी माँसपेशियाँ सुदृढ़ हो जाती हैं और कर्मेन्द्रियाँ एवं ज्ञानेन्द्रियाँ क्रियाशील हो जाती हैं तब उन्हें मातृ-भाषा का पढ़ना व लिखना सिखाया जाता है। यदि मौखिक भाषा की बात है तो बालक अनुकरण द्वारा सुनने-बोलने के क्रम में स्वाभाविक रूप से सीख जाते हैं और यदि लिखित भाषा की बात है तो उसे सिखाया ही जाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मातृ भाषा को सीखने के प्रकृति रूप में उपर्युक्त क्रम ही स्वाभाविक क्रम है—सुनना-बोलना-पढ़ना व लिखना।

1. भाषायी कौशल-श्रवण कौशल

अर्थ—मातृभाषा सीखने में श्रवण कौशल का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि प्रारम्भ में बालक सुनते हैं, लेकिन श्रवण नहीं करते, वे ध्वनियों को बिना समझे या ध्वनियों को बिना व्याख्या किये ग्रहण कर लेते हैं। इससे उनका समुचित ज्ञान का विकास नहीं हो पाता है जबकि श्रवण में पठन सदृश अधिक चिन्तन करना पड़ता है।

"श्रवण व्यक्त अथवा अव्यक्त व्यवहार प्रतिमानों के दमनशील मौखिक अथवा लिखित संकेतों को प्राप्त करने के सम्बन्ध में उच्च व्यक्तियों के वार्तालाप का गहन अध्ययन देने की कला है।"

डिसेन्ट के अनुसार, "श्रवण कौशल तब घटित होता है, जब बालक यह व्यवस्थित करते हैं और याद करते हैं कि क्या सुना गया है।"

हम यूँ कह सकते हैं कि बालक के जन्म के साथ ही अनेकानेक निरर्थक व सार्थक ध्वनियाँ बालक के कण यंत्रों को तरंगित करती रहती हैं और इन्हीं के अनुकरण से वह बोलना सीखते हैं। यदि सार्थक ध्वनियाँ बालक के कान में बार-बार पड़े तो बालक बहरा और गूँगा हो जायेगा। विद्यालय में प्रवेश पाने से पूर्ण बालक की मौखिक भाषा बहुत कुछ विकसित हो जाती है और यह भाषा सुनकर ही सीखी जाती है। आरम्भिक कक्षाओं में बालक 84% समय सुनने में व्यतीत करता है। प्राथमिक कक्षाओं में यह प्रतिशत 58% रह जाता है, लेकिन पुनः माध्यमिक कक्षाओं में सुनने का प्रतिशत बढ़ जाता है। मनोवैज्ञानिक शोध बताते हैं कि विद्यार्थी पढ़कर सीखने को बजाय सुनकर ज्यादा सीखता है।

Scanned with CamScanner